बाल एकांकी

मूल लेखक
सैयद क़ासिम अली

संपादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान
अदीबा इकरा फ़ीरोज़

बाल एकांकी

बाल एकांकी

लेखक
सैयद क़ासिम अली

संकलन/सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान
अदीबा इक़रा फ़ीरोज़

विकास प्रकाशन, कानपुर

मूल्य : एक सौ पचास रुपए मात्र

पुस्तक	:	बाल एकांकी
लेखक	:	सैयद क़ासिम अली
©	:	डॉ. शहनाज़ फिरदौस
संकलन/सम्पादक	:	डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान/अदीबा इक़रा फ़ीरोज़
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन**
		311 सी., विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-208027
संस्करण	:	प्रथम, 2026 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	150/-
ISBN	:	978-93-47390-39-5

दो शब्द

हिन्दी साहित्य की दृष्टि से बाल एकांकी एक महत्त्वपूर्ण विधा है। इस पुस्तक में सैयद क़ासिम अली कृत नौ एकांकी संकलित है। एकांकियाँ बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनके मानसिक, नैतिक और सामाजिक विकास की संभावनाओं को भी सामने लाती हैं। पुस्तक में विभिन्न विषयों और परिस्थितियों को आधार बनाकर ऐसी रचनाएँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनमें बालकों को केवल दर्शक या पाठक के रूप में नहीं, बल्कि समाज और जीवन के सक्रिय सहभागी के रूप में देखा गया है।

बालसाहित्य का उद्देश्य केवल बच्चों को प्रसन्न करना नहीं, बल्कि उनके भीतर जिज्ञासा, विवेक, संवेदना, साहस, सहयोग और ज़िम्मेदारी की भावना विकसित करना भी है। इस दृष्टि से प्रस्तुत बाल एकांकियाँ जिसमें मनोरंजन और उद्देश्यपरकता का ऐसा संतुलन दिखाई देता है, जिसमें उपदेश का बोझ डाले बिना जीवन से जुड़े महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को बच्चों के सामने रखता है। विभिन्न पात्रों और परिस्थितियों के माध्यम से बच्चे स्वयं निर्णय लेने, सही-गलत को पहचानने तथा अपने व्यवहार पर विचार करने की दिशा में प्रेरित होते हैं।

बाल एकांकी-संग्रह बाल साहित्य की दृष्टि से उल्लेखनीय कृति है। इसमें जीवन के विविध अनुभवों, सामाजिक स्थितियों, ऐतिहासिक प्रसंगों, पौराणिक आख्यानों और मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त किया गया है। प्रस्तुत संग्रह की विशेषता यह है कि यहाँ बालक को केवल मनोरंजन प्राप्त करने वाला पाठक नहीं माना गया, बल्कि उसे अपने समय, समाज और जीवन की समस्याओं से परिचित होने वाला संवेदनशील मनुष्य माना गया है। संग्रह में 'सत्य पथ', 'भक्ति', 'परीक्षा', 'तपस्वी बालक', 'त्यागी हातिम', 'अधूरे वैद्य', 'विद्रोह की ज्वाला', 'रेलयात्रा' और 'बनावटीपन अथवा यथार्थता' कुल नौ बाल एकांकियाँ हैं। इनकी विषयवस्तु में पर्याप्त विविधता है, परंतु सभी रचनाएँ किसी-न-किसी रूप में व्यक्ति और समाज के बीच के संबंध को रेखांकित करती हैं।

इस संग्रह में पहली एकांकी 'सत्य पथ' है। ये ऐसी बाल एकांकी है जिसमें सत्य,

कर्त्तव्य, आत्मबोध और उत्तरदायित्व के प्रश्नों को केंद्र में रखा गया है। एकांकी में सत्ता और व्यक्तिगत इच्छा के बीच उत्पन्न होने वाले द्वंद्व को पात्रों के माध्यम से उभारा गया है। युवराज के चरित्र के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि अधिकार प्राप्त कर लेना ही जीवन की सार्थकता नहीं है, उसके साथ कर्त्तव्य का निर्वाह भी आवश्यक है। मित्रों की सलाह, परिस्थितियों का दबाव और निर्णयों के परिणाम पात्रों के भीतर आत्ममंथन की स्थिति पैदा करते हैं। इस दृष्टि से यह एकांकी बाल पाठकों को सत्य को सिर्फ नैतिक उपदेश के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-व्यवहार के अनिवार्य आधार के रूप में देखने की प्रेरणा देती है। सत्य के मार्ग पर चलने का अर्थ कठिनाइयों से बचना नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में भी विवेक और उत्तरदायित्व को बनाए रखना है। यही भाव इस एकांकी को बालसाहित्य के स्तर पर सार्थक बनाता है।

'भक्ति' में पौराणिक आख्यान की पृष्ठभूमि को लेकर निष्ठा, मित्रता, समर्पण और कर्त्तव्य जैसे जीवन-मूल्यों को सामने लाया गया है। राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान जैसे पात्रों के माध्यम से संबंधों की परीक्षा और कर्त्तव्य की गंभीरता को रेखांकित किया गया है। विशेष रूप से सुग्रीव के प्रसंग में यह दिखाई देता है कि व्यक्ति जब किसी पद या अधिकार को प्राप्त कर लेता है तो उसके सामने अपने मूल दायित्व को न भूलने की चुनौती भी उपस्थित होती है। हनुमान का चरित्र निष्ठा और समर्पण का प्रतिनिधि बनकर उभरता है। इस एकांकी में भक्ति केवल धार्मिक भावना तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह विश्वास, कर्त्तव्य और आत्मसमर्पण का व्यापक अर्थ ग्रहण करती है। बाल पाठक के लिए यह रचना इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है कि वह उसे संबंधों की गरिमा और अपने दायित्वों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देती है।

'परीक्षा' इस संग्रह की अत्यंत विचारोत्तेजक बाल एकांकी है। इसका केंद्र विद्यालय, गुरु और विद्यार्थियों के बीच का संबंध है, लेकिन इसके भीतर शिक्षा के वास्तविक उद्‌देश्य का गंभीर प्रश्न उपस्थित होता है। गुरु अपने विद्यार्थियों को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि केवल पाठ याद कर लेना ही शिक्षा की पूर्णता नहीं है। शिक्षा तभी सार्थक है जब वह मनुष्य के व्यवहार और जीवन में दिखाई दे। एकांकी में दीन-दुखियों की सेवा, परोपकार और मानवीय संवेदना को शिक्षा की कसौटी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आगे चलकर परीक्षा की पारंपरिक धारणा पर भी प्रश्न उठता है और जीवन को ही सबसे बड़ी परीक्षा के रूप में देखने की दृष्टि विकसित होती है। इस प्रकार 'परीक्षा' बच्चों को अंक और सफलता की सीमित दुनिया से बाहर निकालकर जीवन के व्यापक अर्थ से परिचित कराती है। शिक्षा को संस्कार, व्यवहार और सामाजिक दायित्व से जोड़ना इस एकांकी का मुख्य उद्‌देश्य है।

'तपस्वी बालक' संग्रह की प्रभावशाली रचना है। इसका केंद्र बरबरीक नामक बाल पात्र है, जो अपनी असाधारण क्षमता और दृढ़ संकल्प के कारण विशिष्ट बनकर

सामने आता है। एकांकी का परिवेश महाभारत से संबंधित है और इसमें कृष्ण तथा पांडवों के प्रसंगों के बीच बरबरीक के चरित्र को विकसित किया गया है। बरबरीक अपने तीन बाणों की अद्भुत शक्ति के कारण युद्ध का परिणाम अकेले बदल देने में समर्थ है, लेकिन उसके सामने केवल शक्ति-प्रदर्शन का प्रश्न नहीं है, उसके सामने धर्म, न्याय और व्यापक हित का प्रश्न भी है। आगे चलकर वह अपने सिर का बलिदान देने का निर्णय करता है। यह प्रसंग बाल-साहित्य में त्याग और कर्त्तव्य की भावना को स्थापित करता है। बालक का साहस, उसकी आत्मनिष्ठा और धर्म के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देने की तत्परता इस एकांकी को महत्त्वपूर्ण बनाती है। यहाँ बालक कमजोर या आश्रित नहीं, बल्कि असाधारण निर्णय लेने की क्षमता रखने वाला व्यक्तित्व है।

'त्यागी हातिम' इतिहास और कल्पना के सहारे मानवीयता, प्रजाहित, युद्ध-विरोध और त्याग की भावना को सामने लाने वाली महत्त्वपूर्ण बाल एकांकी है। हातिम राजा होते हुए भी केवल सत्ता और विजय को जीवन का लक्ष्य नहीं मानता। उसके सामने युद्ध और प्रजा के जीवन का प्रश्न आता है और वह हिंसा के परिणामों पर गंभीरता से विचार करता है। एकांकी में यह विचार उभरता है कि राजा का वास्तविक धर्म अपनी प्रजा की रक्षा और उसके सुख की व्यवस्था करना है। हातिम युद्ध की विभीषिका को केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि मानवीय त्रासदी के रूप में देखता है। उसके विचारों में मनुष्य के प्रति प्रेम और हिंसा के प्रति असहमति दिखाई देती है। आगे चलकर उसका आचरण उसे सामान्य विजेता की अपेक्षा त्यागी और मानवतावादी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करता है।

'अधूरे वैद्य' संग्रह की हास्य प्रधान किंतु सामाजिक दृष्टि से सार्थक बाल एकांकी है। इसमें एक वैद्य, उसके शिष्य और रोगी के प्रसंगों के माध्यम से चिकित्सा के नाम पर होने वाली अज्ञानपूर्ण गतिविधियों और अविवेक को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वैद्य रोग की वास्तविक स्थिति समझने के बजाय अपने अनुमान और तथाकथित अनुभव के आधार पर उपचार करता दिखाई देता है। ऊँट के माँस खाने जैसी विचित्र धारणा से रोग का कारण जोड़ना उसकी अज्ञानता को हास्यास्पद बना देता है। एकांकी का हास्य केवल हँसाने के लिए नहीं है, उसके पीछे अंधविश्वास, अज्ञान और बिना समझे किसी निष्कर्ष पर पहुँच जाने की प्रवृत्ति पर प्रश्न है। बाल पाठक मनोरंजक प्रसंगों के माध्यम से यह समझ सकता है कि किसी भी समस्या के समाधान के लिए विवेक, ज्ञान और सही जानकारी आवश्यक है।

'विद्रोह की ज्वाला' ऐतिहासिक चेतना और राष्ट्रधर्म की भावना से जुड़ी बाल एकांकी है। इसके केंद्र में शिवाजी और तानाजी का प्रसंग है, जिसमें स्वराज्य, कर्त्तव्य, साहस और बलिदान जैसे मूल्यों को उभारा गया है। तानाजी का चरित्र व्यक्तिगत जीवन की अपेक्षा अपने व्यापक दायित्व को अधिक महत्त्व देता है। वह कठिन परिस्थितियों

में भी अपने कर्त्तव्य से पीछे नहीं हटता। शिवाजी के प्रति उसकी निष्ठा और स्वराज्य के लिए समर्पण उसके चरित्र को ऊँचाई प्रदान करता है। एकांकी में वीरता केवल युद्ध-कौशल नहीं, बल्कि अपने उद्देश्य के प्रति अडिग रहने की शक्ति बनकर सामने आती है। तानाजी की वीरगति के प्रसंग में विजय और व्यक्तिगत क्षति का द्वंद्व भी उपस्थित है। इस प्रकार इतिहास यहाँ अतीत का वर्णन मात्र नहीं रह जाता, बल्कि नई पीढ़ी के लिए साहस, स्वाभिमान और कर्त्तव्य का प्रेरक आख्यान बन जाता है।

'रेलयात्रा' सामाजिक जीवन से संबंधित बाल एकांकी है। इसमें रेल की यात्रा को आधार बनाकर सामान्य मनुष्य के व्यवहार, आर्थिक अभाव, सामाजिक संबंधों, छोटे-छोटे स्वार्थ और परिस्थितिजन्य हास्य को सामने लाया गया है। पादनदास और सूँधनदास जैसे पात्र यात्रा के बहाने अनेक ऐसी स्थितियों से गुजरते हैं, जिनमें मानवीय स्वभाव के विविध रूप दिखाई देते हैं। टिकट, यात्रा, भोजन और आर्थिक कठिनाइयों से जुड़े प्रसंग सामान्य जीवन की छोटी-छोटी समस्याओं को नाटकीय रूप देते हैं। इसीलिए बाल पाठक को इसमें अपना आसपास का संसार दिखाई दे सकता है। 'रेलयात्रा' का महत्त्व इस बात में भी है कि यह बच्चों को यह अनुभव कराती है कि साहित्य केवल राजाओं, वीरों और महान व्यक्तियों की कथाओं से नहीं बनता, सामान्य मनुष्य का जीवन भी साहित्य के लिए उतना ही महत्त्वपूर्ण और रोचक है।

'बनावटीपन अथवा यथार्थता' संग्रह की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एकांकियों में से एक है। इसमें सामाजिक विषमता, आर्थिक असमानता, विवाह, स्त्री-पुरुष संबंध और मनुष्य के वास्तविक जीवन-संघर्ष जैसे प्रश्नों को संवादों के माध्यम से सामने लाया गया है। इस एकांकी में केवल सिद्धांतों की चर्चा नहीं है, बल्कि यह भी प्रश्न उठाया गया है कि मनुष्य अपने आसपास की वास्तविक समस्याओं से किस प्रकार जुड़ता है। विवाह संस्था को लेकर पात्रों के बीच होने वाला वैचारिक संघर्ष विशेष ध्यान आकर्षित करता है। कमलेश का चरित्र सामाजिक रूढ़ियों और स्थापित धारणाओं पर प्रश्न उठाता है, जबकि अन्य पात्र उसके विचारों के साथ बहस करते हैं। आगे आर्थिक विषमता और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता का प्रश्न भी उठता है। इस प्रकार यह एकांकी बालसाहित्य की संभावनाओं को व्यापक बनाती है और बच्चों को अपने समय की सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति सोचने की प्रेरणा भी देती है।

पुस्तक में नौ बाल एकांकियों को एक साथ देखने एवं पढ़ने पर स्पष्ट होता है कि संग्रह का संसार अत्यंत व्यापक है। 'सत्य पथ' में सत्य और कर्त्तव्य, 'भक्ति' में निष्ठा और समर्पण, 'परीक्षा' में शिक्षा और जीवन-मूल्य, 'तपस्वी बालक' में त्याग और साहस, 'त्यागी हातिम' में मानवता और लोकहित, 'अधूरे वैद्य' में सामाजिक अज्ञान पर व्यंग्य, 'विद्रोह की ज्वाला' में राष्ट्रधर्म और बलिदान, 'रेलयात्रा' में सामान्य जीवन की विडंबनाएँ तथा 'बनावटीपन अथवा यथार्थता' में सामाजिक यथार्थ और वैचारिक प्रश्न

मौजूद हैं।

इस दृष्टि से यह बाल एकांकी-संग्रह बच्चों को केवल आनंद देने वाला साहित्य नहीं, बल्कि उन्हें जीवन को समझने, प्रश्न करने, निर्णय लेने और मानवीय मूल्यों के पक्ष में खड़े होने की प्रेरणा देने वाला साहित्य है। इसकी रचनाएँ बालमन को इतिहास और पुराण से जोड़ती हैं तो दूसरी ओर उसे अपने आसपास के सामाजिक जीवन से भी परिचित कराती हैं। यही व्यापकता इस संग्रह को उल्लेखनीय बनाती है। बालसाहित्य में ऐसी रचनाओं की आवश्यकता इसलिए भी है कि वे बच्चे को केवल 'बच्चा' बनाकर नहीं रखतीं, बल्कि उसके भीतर भविष्य के संवेदनशील, विवेकशील और उत्तरदायी नागरिक की संभावनाओं को बनाएं रखती हैं।

अलीगढ़ **फ़ीरोज़ ख़ान**

18 अगस्त 2026

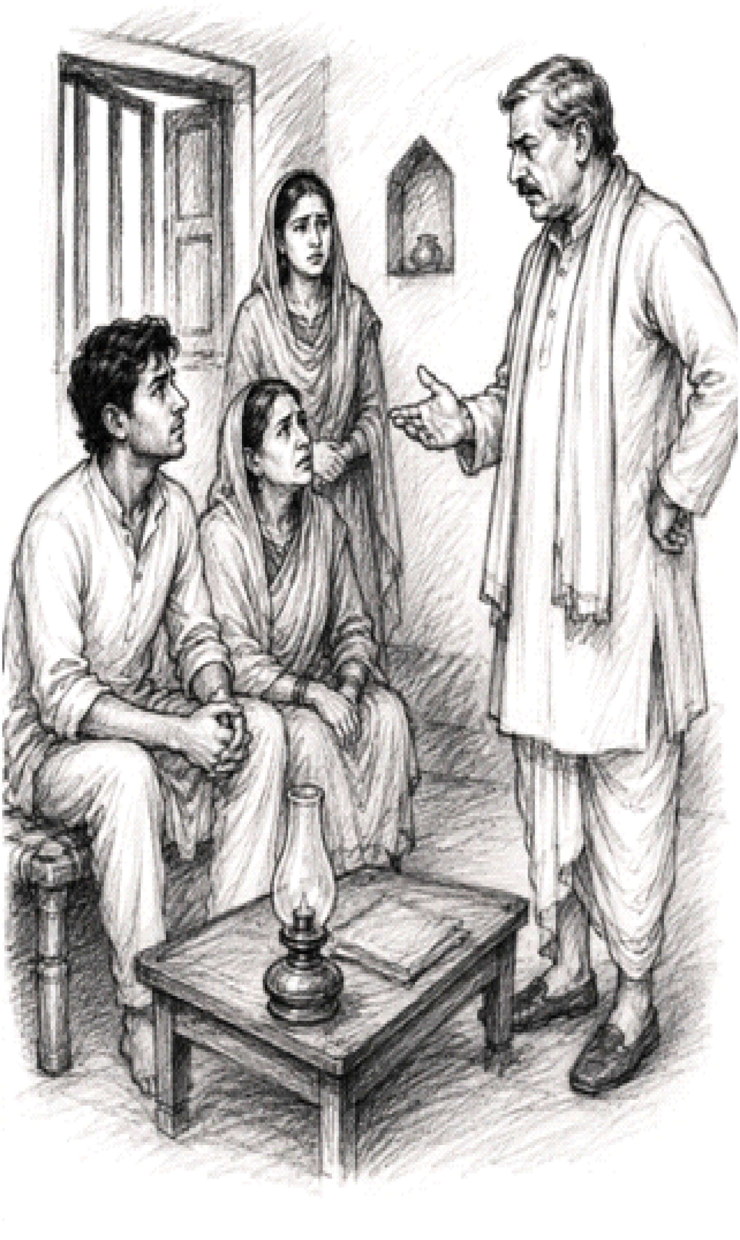

अनुक्रम

	दो शब्द	5
1.	सत्य पथ	13
2.	भक्ति	24
3.	परीक्षा	32
4.	तपस्वी बालक	38
5.	त्यागी हातिम	42
6.	अधूरे वैद्य	50
7.	विद्वेष की ज्वाला	53
8.	रेलयात्रा	59
9.	बनावटीपन अथवा यथार्थता	67